International Journal of Applied Research 2016; 2(5): 05-08

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(5): 05-08
www.allresearchjournal.com
Received: 02-03-2016
Accepted: 03-04-2016

डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम
हिंदी विभाग विज्ञान एवं मानविकी संकाय एस.आर.एम विश्व विद्यालय। कट्टानकुलथुर, चेन्नई, भारत।

Correspondence
डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम
हिंदी विभाग विज्ञान एवं मानविकी संकाय एस.आर.एम विश्व विद्यालय। कट्टानकुलथुर, चेन्नई, भारत।

''मिरि–जीयरी'' उपन्यास में चित्रित सामाजिक चेतना

डॉ. मों सहिदुल इस्लाम

सारांश
मिरि–जीयरी सन 1894 ई. में रजनीकांत बरदलै द्वारा लिखित एक बहुचर्चित उपन्यास है। यह प्रथम असमी उपन्यास है। जिस प्रकार हिंदी कथा साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान है, उसी प्रकार असमी कथा साहित्य में रजनीकांत बरदलै का स्थान है। जिस प्रकार मुंशी प्रेमचंद को हिंदी उपन्यास सम्राट माना जाता है, ठीक उसी प्रकार रजनीकांत बरदलै को असमी उपन्यास सम्राट माना जाता है। असमी कथा साहित्य में उनका योगदान अतुलनीय हैं। रजनीकांत बरदलै सन 1925 ई. में असम साहित्य सभा के सभापति रहे। उन्हें असम का ''स्कट'' नाम से भी जाना जाता है।
मिरि जीयरी एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में उपन्यासकार रजनीकांत बरदलै जी ने मिरि जाति (वर्तमान मिचिं) की सामाजिक रीति–रिवाज आदि के बारे में वर्णन किया है। मिरि जाति के सामाजिक रीति–रिवाज का बंधन बहुत ही कठिन है। इस बंधन के खिलाफ कोई आवाज उठा नहीं सकते हैं। समाज मुखिया की राय से ही चलता है। समाज के मुखिया के खिलाफ कुछ कहना भगवान के खिलाफ कहना माना जाता है।
प्रस्तुत उपन्यास में बरदलै जी ने मिरि जाति के विवाह बंधन के रीति–रिवाज, सामाजिक उत्सव – पर्व जैसे नराछिगा बिहू, सामाजिक मंगल कामना के लिए चरग पूजा, मूगलिंग मिरेमा देवता की पूजा, तथा उनकी संतुष्टि के लिए सूअर, मूर्गा आदि की बलि चढ़ाना, साथ ही लड़का शादी से पहले लड़की को साठ से लेकर दो–तीन सौ तक रूपए देकर ससुर के घर में दो साल तक काम करना पड़ता है। इसे असमी में घर जोवाई तथा घर दामाद खटना कहते हैं। लड़की के माता–पिता इन दो सालों में लड़के के रहन–सहन देखकर, उसके बाद ही विवाह की तिथि तय करते हैं। इस उपन्यास में एक बारह साल का लड़का जंकि और आठ साल की लड़की पानै, प्रेमी–प्रेमिका दोनों माता पिता की असहमति से घर से भागकर शादी करते हैं और उसका अंतिम परिणाम किस तरह होता है, उसका मर्मान्तिक चित्रण कर उपन्यासकार पाठकों के हृदय झकझोर कर देते हैं।

मूल शब्द : सामाजिक, सांस्कृतिक रीति–रिवाज, मुखिया की प्रधानता, सजा का परिणाम।

भूमिका : रजनीकंत बरदलै का जन्म 24 नवम्बर सन 1867 ई. असम के गुवाहाटी में हुआ था। उनके पिता का नाम नरकांत बरदलै और माताजी का नाम स्वर्णमयी देवी। बरदलै जी ने सन् 1885 ई. में गुवाहाटी सरकारी हाईस्कूल से प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सन 1887 ई. में कलकत्ता मेट्रोपलिटान कॉलेज से एफ. ए. तथा सन 1889 ई में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण किए थे।
उन्होंने सन 1890 ई. में गुवाहाटी उपायुक्त कार्यलय में सहायक पद से कर्म जीवन की शुरूआत करते हुए सरकारी विभिन्न पदों में सेवा प्रदान कर सन 1918 ई. में सेवा निवृत हुए थे। साहित्य लेखन के प्रति छात्रावस्था से ही आकर्षित हुए थे। साथ ही साथ उन्होंने व्यस्ततामय कर्म जीवन में भी साहित्य से लगातार जुड़े हुए थे। उन्होंने प्राचीन असम के विभिन्न गौरवमय तथा हृदयविदारक घटनाओं को कथासाहित्य के माध्यम से उजागर किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से असमी कथा साहित्य को विश्व साहित्य में जोड़कर एक नई दिशा प्रदान किए है। उनके कथा साहित्य में ''वाल्टार स्कट'' और वंकिम चन्द्र चेटर्जी के कथा साहित्य का प्रभाव मिलता है। असमी कथा साहित्य में उनका अमूल्य योगदान हेतु उन्हें ''असम स्कट'' , ''असम वंकिम चन्द्र'' तथा ''असम उपन्यास पिता'' नाम से जाने जाते है।

सामाजिक चेतना

सामाजिक रीति–रिवाज के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान करने की सोच ही सामाजिक चेतना है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज को सुपरिचालित करने के लिए मनुष्य को कुछ सामाजिक रीति–रिवाज अपनाना पड़ता है। ताकि इस रीति–रिवाज से समाज को एकसुत्र में बांधकर रख सके। अतः समाज को सुपरिचालित करने के लिए समाज के लोग एकत्रित होकर सर्वसम्मति से एक निर्दिष्ट योग्य व्यक्ति का चयन करते हैं, जिसे मुखिया कहते हैं।

मुखिया की नीति निर्देश से समाज का कार्य चलता है। यह परंपरा प्राचीन काल से आज तक भी जारी है। समाज को नई दिशा प्रदान करना ही मुखिया का परम कर्त्तव्य है।

मिचिं तथा मिरि जाति के लोग सदियों से पहले उत्तर–पूर्व भारत के विभिन्न छोटी–बड़ी नदी के दोनों किनारे बसे थे। वर्तमान भी मिचिं जाति के गाँव ब्रहमपुत्र, दिहिंग, दिचांग, दिखौ, धनशिरि, सोवनशिरि, बुरै, भराली, आदि नदी के दोनों किनारे अवस्थित हैं। मिचिं जाति नदी के किनारे बसने के कारण उनकी संस्कृति को नदी की संस्कृति भी कहते है। मिचिं जाति प्रकृति प्रिय होते है। नदी के किनारे गाँव में खेती–बारी तथा कृषि कर्म कर अपना जीविका निर्वाह करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में बरदलै जी ने मिरि जाति के सामाजिक रीति–रिवाज, जातीय संस्कृति आदि के बारे में सुंदर रूप से प्रस्तुत किया है।

मिरि–जीयरी मिरि तथा मिचिं समाज के आधार पर लिखित उपन्यास है। अतः मिरि जीयरी उपन्यास में चित्रित सामाजिक चेतना को हम निम्न रूप से देख सकते हैं–

शादी प्रथा

प्रस्तुत उपन्यास में मिरि जाति की शादी प्रथा का चित्रण किया गया है। मिरि जाति की शादी प्रथा अन्य जाति की शादी प्रथा से भिन्न है। लड़का– लड़की की शादी माता–पिता की सहमति के बाद गाँव की मुखिया से अनुमति लेना पड़ता है। इसके बाद लड़का लड़की के पिता को साठ से दो–तीन सौ तक रूपए (गा– धन) देकर लड़की के घर में दो साल तक काम करना पड़ता है। जिसे असमी भाषा में घरजोवाई अथवा घर दामाद खटना कहते हैं। इन दो साल में लड़की के माता–पिता लड़के का चाल–चलन आचार –व्यवहार तथा कर्मपटुता आदि देखकर उस लड़के से अपनी लड़की की शादी तय करते है। फिर सामाजिक रूप से दिन बार देखकर शादी होती है। अतः मिरि समाज की शादी में गा–धन देनी की प्रथा आज भी प्रचलित है।

प्रेम विवाह का परिणाम

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम विवाह का करूण चित्रण किया गया है। इसमे एक आठ साल की लड़की पानै और एक बारह साल का लड़का जंकि का प्रेम विवाह का मर्मान्तिक चित्रण किया है। बचपन से ही जंकि और पानै एक दूसरे से निस्वार्थ प्रेम करते थे। गाँव में जब दोनों खेत की रखवाली करने जाते थे, तब दोनों मचान घर में बैठकर एक दूसरे से, बात करते थे। मिरि जाति का प्रसिद्ध उत्सव नराछिगा बिहु में पानै नाचती और जंकि ढोल बजाता था। फलस्वरूप एक दूसरे से प्रेम करने लगते है। जब पानै की उम्र बढ़ने लगती है, तब उसके माता–पिता उसकी शादी सोवनशिरि गाँव के कुमुद नामक लड़के से तय करते हैं।

कुमुद के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी है। लेकिन पानै राजी नहीं होती है। मिरि जाति की रीति–नाति के अनुसार शादी से पहले तय किया हुआ लड़का, लड़की के घर में रूपए–पैसे देकर दो साल तक काम करना पड़ता है। इसे घर जोवाई खटना कहते है। कुमुद पानै के घर में रूपए–पैसे देकर घर जोवाई खटने आ जाते है। इसी बीच पानै जंकि के साथ भाग जाती है। गाँव से नदी पार होकर सोवनशिरि के जंगल में चले जाते है। गाँव के लोग दोनों को खोजते है, लेकिन नहीं मिलते है। गाँव के लोग लगातार दो महीने तक खोजने के बाद अचानक एकदिन वहीं जंगल से पकड़कर ले आते है। सजा देते है, विचार होता है। विचार में यह फैसला होता है कि दोनों की उमर कम है। अतः दोनों को अपने –अपने घर में भेज देते हैं।

कुछ महीने के बाद पानै के माता–पिता पानै को कुमुद से शादी होने के लिए उपदेश देते हैं कि कुमुद घर जोवाई खटने के लिए आया है। यह हमारी तथा कुमुद की इज्जत का सवाल है। इस तरह पानै को माता–पिता समझाने की कोशिश करते है मगर पानै अपने सिद्धांत में अटल रहती है। तब उनके माता–पिता पूर्व वचन के अनुसार जोर जबरदस्ती शादी देने के लिए निश्चय करते है। पानै माता–पिता की यह बात सुनकर दूसरे दिन फिर घर से पलायन करती है।

पानै का पलायन की खबर जंकि को अपनी सहेली से मिलती है। जंकि को बहुत दुःख होता है। वह भी सोवनशिरि के गहन जंगल में पानै की खेज मे निकल जाता है। जंगल में उसे गाछि मिरि के लोग पकड़ लेते है। अपने घर ले जाते है। गाछि मिरि के घर में जंकि को बन्धुवा मजदूर बन कर जीवन निर्वाह करना पड़ा। जंकि को गाछि मिरि के वेशभूषा से पहचान नहीं सकते है।

इधर पानै की स्थिति और दयनीय हो गई। पानै बिना खाना–पिना के कारण अचेतनावस्था में पड़ी है। जंगल में उसे कोई अनजान लोग अपने घर ले जाते हैं। सहारा देने के बहाने जिस व्यक्ति ने उसे अपने घर ले गया था, वह भी पानै की इज्जत लूटने की कोशिश किया था। अतः दो दिन के बाद पानै अपनी रक्षा के लिए उस व्यक्ति के घर से फिर जंगल चली जाती है। जंकि की तरह पानै को भी गाछि मिरि के लोग पकड़ कर अपने गाँव ले जाते हैं। गाछि मिरि पानै की वेशभूषा देखकर तथा उसकी सुन्दरता देखकर बहुत ही प्रभावित हो जाते हैं। उसे कहीं जाने नहीं देते। वह अपने भाग्य को कोसने लगी। न जाने उसकी क्या होगी ! जंकि का क्या होगा ! दुःख में वह रोने लगती है।

इस तरह दोनों अलग–अलग से दुःखपूर्ण जीवन बिताने के बाद एक दिन अचानक उसी गाछि मिरि के गाव में जंकि पानै को दूर से देखती है। पानै इशारा से जंकि को बात न करने के लिए कहती है। दोनों के मन में आशा की किरण जागते है। एक दिन रात जंकि भागने की योजना बनाने के लिए पानै के पास मिलने आते है। तब उस घर के लोग दोनों को बात करते हुए पकड़ते है। जंकि को चोर बताकर दोनों को रस्सी से बांधकर दूसरे दिन गाँव के मुखिया बारेगाम के पास ले आते है।

विचार में दोनों सफाई देते हैं कि वे चोर नहीं हैं। वे एक दूसरे से प्यार करते है। दोनों कार्चि–कार्टान देवता को साक्षी मानकर शादी किए है। पानै के गर्भ में दो महीने की संतान भी है। लेकिन मुखिया बारेगाम जंकि–पानै की बात नहीं मानते है। दोनों को सजा के साथ–साथ जुर्माना के रूप में बारेगाम को सुअर, मेथोन, शराब तथा भोज आदि देने के लिए कहते है। पानै को देउमणि और देउघटि आदि कीमती आभूषण देने के लिए कहते हैं। लेकिन इतनी सारी चीजें देने के लिए उसके पास रूपए नहीं हैं। जो कुछ था जंगल में दूसरे लोग हड़प लिया। दोनों बारेगाम को माफ करने के लिए कातर प्रार्थना करते हैं, लेकिन बारेगाम अपने कठोर सिद्धांत में अटल रहकर दोनों को एक साथ हाथ–पैर बांधकर दोनों के शरीर में किल मारकर सोवनशिरि नदी की धारा में बहा देने के लिए आदेश देते है। बारेगाम के आदेशानुसार जीवंत अवस्था में सोवनशिरि की तेज धारा में जंकि–पानै को बहा देते है। जंकि–पानै प्रेम संसार का जो सपना देखा था वह अकाल में ही विलीन हो गया। अतः प्रेम विवाह का जो भयानक परिणाम है उसे बहुत ही मर्मान्तिक रूप से उपन्यासकार बरदलै जी ने प्रस्तुत उपन्यास में चित्रण किया है।

बारेगाम की प्रधानता

मिरि समाज में बारेगाम की प्रधानता सर्वेसर्वा है। समाज के मुखिया को मिचिं भाषा में बारेगाम कहते है। मिचिं समाज बारेगाम के आदेश–निर्देश से चलता है। उनके फैसला के खिलाफ कोई आवाज उठा नहीं सकते है। समाज में किसी भी कार्य एवं विषय का फैसला बारेगाम करते है। उन्हें भगवान के रूप में मानते है। मिरि समाज उनके खिलाफ कुछ कहना भगवान के खिलाफ कहना मानते है। बारेगाम समाज में किसी भी व्यक्ति यदि सामाजिक अहित काम करें तो उन्हें कठोर सजा देते है।

गाँव की समृद्धि के लिए पूजा

मिरि जाति के लोग अपने गाँव की समृद्धि के लिए तथा विभिन्न अमंगल यथा गाँव में बीमार, महामारी से निजात पाने के लिए, गाव की मंगल कामना के लिए विभिन्न पूजा करते हैं। इनमें से कार्चि कार्टान, चरग पूजा तथा मंगलिंग–मिरेमा आदि प्रधान है। कार्चि कार्टान मिरि जाति के आराध्य देवता है। किसी भी काम की सफलता के लिए सबसे पहले कार्चि कार्टान देवता की पूजा करते हैं। उनकी पूजा के लिए मूर्गा, सुअर आदि की बलि चढ़ाकर अपना तथा समाज के मंगल की कामना करते हैं।

मिरि जाति का जनविश्वास है कि मूर्गा, सुअर आदि की बलि चढ़ाने से देवता प्रसन्नित होते हैं। अतः हर पूजा में परिवार एवं समाज की मंगल कामना के लिए मेघ, बिजली, चन्द्र, सूर्य, तारे, धरती आदि प्रकृति के देवताओं को मद (सराब), सुअर, मूर्गा आदि अर्पन कर पूजा करते हैं ताकि उनके परिवार तथा गाँव में किसी भी मुसीबत ना आये, हमेशा गाँव समृद्धिशाली रहे इसी की कामना करते हैं।

सजा का परिणाम

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार बरदलै जी ने सजा का मर्मान्तिक परिणाम के बारे में उजागर किया हैं। मिरि समाज में किसी भी व्यक्ति यदि सामाजिक रीति–रिवाज के खिलाफ कदम उठाएँ तथा काम करें तो उसकी सजा कठोर होता है। प्रस्तुत उपन्यास में जंकि –पानै सामाजिक रीति–रिवाज न मान कर, दोनों गाँव से भाग कर प्रेम विवाह किए थे। इसीलिए गाँव के मुखिया बारेगाम दोनों को दोषी ठहरा कर मौत की सजा दिये थे। अतः इससे हम अनायास कह सकते है कि मिरि समाज में दोशी की सजा का परिणाम कितना भयानक है !

प्रेम की गहनता की उपलब्धि का अभाव

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार रजनीकांत बरदलै जी ने प्रेम की गहनता की उपलब्धि का अभाव को दर्शाया है। जंकि और पानै बचपन से ही एक दूसरे साथ घूमते खेलते थे। गाँव मे धान की रखवाली करते थे, गाँव के उत्सव में एक साथ बिहु गाते– नाचते थे। दोनों अपने ह्रदय की बात एक दूसरे से करते थे। एक दूसरे को अच्छी तरह समझते थे। दोनों के प्रेम की गहनता के कारण एक दूसरे को बिना देखें रह नहीं सकते है।

जंकि–पानै का प्रेम की गहनता जानते हुए भी पानै की माता – पिता उसे अनदेखा कर पानै की शादी उसी गाँव के नमेन गाम का बेटा कुमुद से तय करते है। पानै परोक्ष रूप से कह भी देती है कि वह जंकि से प्रेम करती है, अतः वह जंकि से शादी होना चाहती है। पानै के माता–पिता पानै की बात नहीं मानते है। क्योंकि जंकि गरीब है, उसका माता–पिता नहीं है, घर दामाद खटने के लिए उसके पास रूपए नहीं है। साथ ही साथ जंकि पानै से शादी कर उसे ठीक से रख नहीं पायेंगे। अंत में पानै के माता–पिता उसकी शादी कुमुद से ही तय करते हैं।

लेकिन पानै कुमुद से शादी होने के लिए राजी नहीं होती है। अतः पानै के माता–पिता उसे जबरन कुमुद से शादी कराने के लिए, कुमुद को घर दामाद खटने के लिए न्योता देते हैं। कुमुद लड़की का गा–धन देकर अर्थात घर दामाद खटने के लिए लड़की को साठ रूपए से लेकर दो–तीन सौ तक रूपए लड़की के माता–पिता के पास देना पड़ता है। उसे देकर पानै के घर में आ जाते हैं। कुमुद पानै के घर में रहने के बावजूद भी पानै का दिल जीत नहीं पाया। एक दिन फिर पानै घर छोड़कर जंकि के साथ सोनशिरि नदी नाव से पार होकर सोवनशिरि के गहन जंगल में भाग जाती है। अतः पानै के माता–पिता के प्रेम की गहनता की उपलब्धि का अभाव के कारण दोनों को अकाल में अनमोल जीवन खोना पड़ा।

आलि आये लिगां तथा नराछिगा बिहु

आलि आये लिगां तथा नराछिगा बिहु मिरि जाति का एक प्रसिद्ध बसंत उत्सव है। यह उत्सव कृषि से जुड़ा है। साधारणतः मिरि जाति के लोग नदी के किनारे में बसते है। वे लोग नदी के पानी से खेती करते हैं। मुलतः कृशि पर उनका जीवन निर्वाह होता है। फागुन महीने में किसान खेतों में अनाज के बीज बोते हैं। अतः फागुन महीना के प्रथम बुधवार के दिन मिरि जाति के लोग यह उत्सव मनाते हैं। उस दिन गाँव के लोग एकत्रित होकर खेत के एक कोना साफ कर पूजा करते हैं। खेत में अच्छी फसल होने के लिए लक्ष्मी की पूजा करते हैं। इस पूजा में लाल रंग का मूर्गा की बलि चढ़ाते हैं। इसके बाद खेत के चारों कोने में चार मेघेला के पौधे काटकर गाढ़ देते हैं ताकि प्राकृतिक आपदा से फसल नष्ट न हो।

इसके बाद गाँव के सभी लोग आपस में प्रति घर से चावल, दाल, तेल, नमक, मूर्गा, सुअर आदि समर्थानुसार एकत्रित करके गाँव के सामुहिक भंडार में जमा करते हैं। फिर मुखिया की आज्ञा से इन सामान को निकाल कर सामुहिक रूप से भेजन पकाते हैं। भोजन तैयार होने के बाद भकत तथा देउधाई पूजा करते है, फिर गाँव के वृद्ध तथा बड़े जनों से आशीर्वाद लेकर सभी लोग भोजन करते हैं।

भोजन के बाद गाँव के युवक–युवतियाँ मिलकर तथा नये वस्त्र परिधान कर सामुहिक रूप से अपनी जातीय संस्कृति नराछिगा विहु गीत गाते हैं, नाचते हैं, पारंपरिक वाद्ययंत्र ढोल, खोल, पेपा (भैंस के सींग से बनाया हुआ एक प्रकार का वाद्ययंत्र) आदि बजाते हैं। युवा लड़के ढोल, खोल, पेपा, आदि बजाते तथा गाते हैं, युवतियाँ इसके ताल में नाचती हैं। चारों ओर खुशियाँ ही खुशियाँ। इस पर्व में प्रेमिक–प्रेमिका एक दूसरे को नए उपहार देते हैं। इसी पर्व में ही लड़का–लड़की एक दूसरे से प्रेम की भावना निवेदन करते हैं। यह पर्व कोई दिनों तक चलता है। गाँव के हर घर में आपां (एक प्रकार का सराब) बनाते हैं और घर में आये हुए मेहमान को इसी आपां से खातीरदारी करते हैं। यह उत्सव कई दिनों तक चलता है।

मिरि जाति के लोग इसी तरह आलि आये लिगां उत्सव तथा नराछिगा बिहु में सामाजिक मनोभावों के साथ–साथ सांस्कृतिक मनाभावों का आदान–प्रदान कर भाईचारे की भावना का परिचय देते हैं।

निष्कर्ष : अतः निष्कर्ष में हम अनायास कह सकते हैं कि उपन्यासकार रजनीकांत बरदलै जी ने प्रस्तुत उपन्यास ''मिरि–जीयरी'' में मिरि समाज के सामाजिक रीति–रिवाज के साथ–साथ मिरि जाति की शादी प्रथा, समाज के मुखिया की प्रधानता, प्रेम विवाह का परिणाम, गाँव की समृद्धि के लिए पूजा, सामाजिक अहित कार्य का परिणाम, मिरि जाति का प्रमुख उत्सव ''आलि आये लिगां तथा नराछिगा बिहु'' के माध्यम से मिरि जाति के सामाजिक चेतना को बहुत ही सुन्दर रूप से चित्रण कर अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। साथ ही साथ जंकि–पानै के प्रेम गाथा का करूण परिणाम चित्रण कर समाज को सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं।

सहायक ग्रंथ:

1. मिरि–जीयरी उपन्यास –रजनीकांत बरदलै।
2. लखिमी– (जनगोष्ठीय आलोकपात) असम साहित्य सभा, लखीमपुर 2003.

शब्दार्थ

घर जोवाई खटना : मिरि समाज का नियम है कि शादी के पहले लड़का लड़की के घर में, लड़की के पिता के हाथ में साठ से लेकर दो–तीन सौ तक रूपए देकर दो साल तक काम करना पड़ता है, इसे घर जोवाई खटना कहते है।

आलि आये लिगां तथा नराछिगा बिहु : मिरि जाति का प्रधान उत्सव का नाम।

कार्चि–कार्टान : आराध्य देवता का नाम, जिसे मिरि जाति के लोग पूजा करते हैं।

पेपा : भैस के सींग से बनाया गया एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

गाछि मिरि : मिरि जाति का एक दूसरा जनजाति।

मेथोन : एक जानवर का नाम, जो जंगल में मिलता है।

गा–धन : शादी के पहले घर दामाद खटने के समय लड़का द्वारा लड़की को दिए गए रूपए को गा–धन कहते है।

देउ–मणि, देउ–घटि : एक प्रकार के पत्थर है, जो बहुत ही कीमती है।

गाम : किसी एक वंश प्रधान का नाम।

देउधाई : मिचिं भाषा में पुजारी को देउधाई कहते हैं।

मेघेला : इकरा जातीय एक प्रकार वन।